F-5
D.El.Ed-1st year

इकाई-III Date:-06.05.20

Topic:- बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं?

Ans:→ यह सोचने वाली बात है कि 3-4 साल के बच्चे भाषा प्रयोग के मामले में एक वयस्क की तरह होते हैं। वे जीवन की विभिन्न स्थितियों में अनेक प्रकार की संरचनाओं से युक्त भाषा का सहजता के साथ प्रयोग करते हैं। उनकी भाषा व्याकरण सम्मत होती है यानि उनकी भाषा में एक नियमबद्ध व्यवस्था नजर आती है। चाहे वह बज्जिका हो या मैथिली या फिर हिन्दी। ऐसा कौन सा औजार है जिसके सहारे वे भाषा का सही-सही प्रयोग कर लेते हैं। उन्हें भाषा की संरचना सीखनी नहीं पड़ती और न ही उन्हें कोई भाषा सिखाता है, न ही सिखा सकता है। फिर यह कैसे संभव है कि बच्चे अपनी बात कहने और दूसरों की बातें सुनने-समझने की क्षमता रखते हैं। दरअसल भाषा अर्जित करने के संदर्भ में अनेक विचार हैं जो अपने अपने नजरिए से बच्चों द्वारा भाषा अर्जित करने की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं। सामान्यतः सीखने के संदर्भ में तीन बिन्दुओं को समझना बेहद जरूरी है। हमारे सीखने में प्रकृति, समाज और व्यक्ति की महती भूमिका होती है।

हम अपने आस-पास की चीजों को देखते-समझते हैं और उनकी छवि अथवा संकल्पना का निर्माण करते हैं। गाय, पेड़, सूरज, चाँद, आसमान, नदी आदि की संकल्पनाओं के निर्माण के लिए प्रकृति के संपर्क में आना जरूरी है। समाज के संपर्क में आने पर माँ, नाना, रोटी, बस्ता, किताब आदि की अवधारणाओं का निर्माण होता है। समाज चीजों को एक खास ध्वनि अथवा नाम देने का काम करता है। यही कारण है कि 'कुत्ता' के लिए राजस्थान के एक भाषा समुदाय में 'गुंडकलो' शब्द प्रचलित है तो किसी अन्य भाषा समाज में उसी के लिए डॉग, कुत्ता, कूकर आदि शब्द प्रचलित हैं। इसका एक निहितार्थ यह भी है कि भाषा सीखने में समाज की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। एक और मत के अनुसार भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता ही वह आधार है जिसके सहारे बच्चा विविध भाषा-प्रयोग करता है। इसके विपरीत एक विचारधारा अनुकरण को भाषा सीखने का एकमात्र आधार स्वीकार करती है।

आइए, एक-एक करके इन परिप्रेक्ष्यों को समझने की कोशिश करते हैं।

P.T.O.

Scanned with CamScanner